शास्त्रीय संगीत (ध्रुपद)
बी.ए.प्रथम वर्ष–प्रथम प्रश्न–पत्र

इकाई–प्रथम

नाद, शरीर में नाद की उत्पत्ति, शरीर के विभिन्न स्थानों से संबंधित नाद की प्रकृति (संगीत रत्नाकर के श्लोक के अनुसार)

इकाई– द्वितीय

पणिनि द्वारा एवं वेद प्राति शाख्यों में उल्लेखित तीन वैदिक स्वर (उदात्त,अनुदातत, स्वरित) की व्याख्या तथा मुद्राओं के प्रयोग के साथ वेदपाठ के विभिन्न शाखाओं में इनका प्रयोग।

इकाई–तृतीय

संगीत (रत्नाकर आदिग्रंथों के अनुसारव्याख्या) नाद,श्रुति,स्वर,प्रतिध्वनि,षडजपंचम के संबंध से उत्पन्न बारह स्वर व बाइस श्रुतियां, सप्तक (मन्द,मध्य,तार) पूर्वाग, उत्तरांग, अष्टक, वर्ण, अंलकार, राग वर्गीकरण का प्राचीन रागरागिनी पद्धति, भारतखंडे द्वारा प्रस्तावित आधुनिक ठाठ पद्धति, उनके द्वारा प्रस्तावित 10 ठाठ के नाम व स्वर, आश्रय राग, वादी, संवादी, विवादी, वर्जितस्वर, आरोह ,अवरोह, राग का औचारात्मक रूप, पकड़, राग की जाति (औडव,षडव, संपूर्ण) मूर्छना पद्धति से रोगों की उत्पत्ति की अवधारणा।

इकाई–चतुर्थ

ध्रुपद, धमार, ख्याल, तराना,चतुरंग, भजन, टप्पा,ठुमरी,मसीतखानी व रजाखानीगत का परिचय। शास्त्रीय संगीत एवं लोक संगीत का ज्ञान तथा गीत, गजल, होरी का परिचय एवं महत्व,गायन के विद्यार्थियों के लिए तानपुरा तथा वाद्य के परीक्षार्थियों के लिए अपने–अपने वाद्य का सामान्य परिचय तथा उनके विभिन्न अवयवों का सचित्र वर्णन, साथ ही साथ उनके तारों को विभिन्न स्वरों में मिलाने की जानकारी। वाद्यों में जवारी का महत्व।

इकाई–पंचम

शारंग देव, अमीर खुसरों, स्वामी हरिदास, मान सिंह तोमर, तानसेन, नायक बख्शू का संक्षिप्त जीवन परिचय एवं संगीत के क्षेत्र में योगदान। विभिन्न सेनी परम्पराओं का संक्षिप्त इतिहास। संगीत के मुख्य प्राचीन शास्त्र ग्रंथों के नाम तथा उनके लेखकों और लेखनकाल की जानकारी।

शास्त्रीय संगीत (ध्रुपद)
बी.ए.प्रथमवर्ष–द्वितीय प्रश्न–पत्र

इकाई–प्रथम

- पाठ्यक्रम के राग यमन, भैरव, भूपाली,देश, शुद्ध सारंग, मालकौंस का शास्त्रीय परिचय और सामान्य जानकारी।
- आकार मात्रिक स्वरलिपि पद्धति।
- ध्रुपद की बंदिश के चारतुकों के नाम और लक्षण।

इकाई– द्वितीय

- प्रत्येकरागमें एक चौताल की ध्रपुद बंदिश/गत (तंत वाद्य के विद्यार्थियों के लिए)/चौताल में ठेका तथा दो परन एवं दो तिहाई ठाह दुगुन और चौगुन के साथ (घन वाद्य के विद्यार्थियों के लिए) (गायन की बंदिशों में से कम से कम दो बंदिशे चारतुककी हो।)

- पाठ्यक्रम के किन्हीदोरागमें धमार/गत/(तंत वाद्य के विद्यार्थियों के लिए)/धमारमेंठेका (अवनद्व वाद्य के विद्यार्थियों के लिए)

- पाठ्यक्रम के किन्हीदोरागमेंसूलताल की बंदिशे/गत (तंत वाद्या के विद्यार्थियों के लिए)/सूलताल में ठेका (घन वाद्य के विद्यार्थियों के लिए) (गायन की बंदिशों में से कम से कम एक चार तुककी हो।

इकाई–तृतीय

- पाठ्यक्रम के रागों में यमन और भैरव में संक्षिप्त औचारात्मक आलाप।

- पाठ्यक्रम के दौ रागों में प्रस्तार सरगम।

- 3 स्वरों से उत्पन्न 6 मेरूखण्ड तानों का अभ्यास।

- ताल,लय (विलम्बित,मध्य, द्रुत), मात्रा, विभाग,सशब्दक्रिया, निशब्दक्रिया, ठाह, दुगुन, विभाग,सम,ताली,खाली,ठेका,आवर्तन। पखवज का संक्षिप्त परिचय। पखावज की बनावट व उसके विभिन्न अंगों का सचित्र वर्णन। आदिताल, चौताल,धमार,झपताल,सूलताल, तीव्रातालों का परिचय ठाह सहित ताल लिपि में लेखन।

इकाई–चतुर्थ

ध्रुपद गायन के बारह मूलभूत क्रिया (आकार, गमक, लहक,डगर,धुरन,मुरन,सूत,मींड,कम्पित,आंदोलित, हुदक, स्फुरित) की जानकारी। ख्यालगायन की विशिष्ट क्रियाएँ जैसे कण, मुरकी, खटका, फिरत इत्यादि। तान शब्द की ध्रुपद के संदर्भ में प्राचीन परिभाषा (संगीत रत्नाकर के अनुसार) एवं ख्याल गायन में तान की वर्तमान में प्रचलित परिभाषा।

इकाई–पंचम

लगभग 400 शब्द में संगीत सम्बन्धी किसी विषय पर निबंध लेखन।

पाठ्यक्रम में उल्लेखित हर संगीत (गायन/वादन) के ध्वनिमुद्रण के नमूनों का श्रवण। ध्वनि मुद्रण को सुनकर शैली/राग/ताल को पहचानने की क्षमता।